शिक्षा की निरन्तरता बनाए रखने की एक कोशिश

सन्दर्भ : लॉकडाउन

कविता कपिल और कल्पना पंवार

यह लेख कोरोना महामारी के दौर में स्कूली शिक्षा को जारी रखने के लिए किए गए प्रयासों के बारे में है। लेखिका बताती हैं कि शुरुआत ऑनलाइन माध्यम से हुई। उसके बाद उन्होंने वर्कशीट के ज़रिए बच्चों से जुड़ने के बारे में सोचा। यह सोचते हुए वर्कशीट बनाई गईं कि अगर बच्चों के साथ नियमित बातचीत नहीं भी हो पाए, तो भी वे वर्कशीट को समझ पाएँ और उसपर काम कर पाएँ। इन बनाई गईं वर्कशीटों पर वे नियमित रूप से बच्चों और अभिभावकों के साथ अन्त:क्रिया करती रहीं और इस अन्त:क्रिया के आधार पर उन्हें बेहतर भी बनाती गईं। इस पूरे अनुभव के आधार पर लेखिका यह भी कहती हैं कि वर्कशीट सीखने-सिखाने का अच्छा तरीक़ा है लेकिन यह हमेशा ही अच्छा होगा, यह ज़रूरी नहीं है। सीखने-सिखाने का बेहतर तरीक़ा क्या होगा, यह परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है। सं.

जिन अनुभवों और आयामों को इस लेख में साझा किया गया है, कोरोना के दौर में उनके बारे में सोच पाना हमारे लिए बहुत ही मुश्किल रहा। लेकिन आज इनके बारे में सोचने पर ऐसा लगता है कि जब सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं और उम्मीदें छूटने लगती हैं तब हम जीवन के कुछ बहुमूल्य अनुभवों से गुज़रते हैं। कोरोना महामारी के दौर में शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करना एक बहुत बड़ी चुनौती रही है। जिस समय सभी घरों में बन्द थे, वहाँ 5-6 आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा में निरन्तरता बनाए रखना बहुत मुश्किल काम था। जब इस बीमारी का अन्तिम छोर नज़र नहीं आ रहा था तब लगने लगा कि अब कहीं से तो शुरुआत करनी पड़ेगी। और तब हम औपचारिक शिक्षा के ढाँचे से बाहर निकलकर शिक्षा में नए विकल्प खोजने की तरफ़ बढ़ने लगे।

सभी की भाँति हमने भी ऑनलाइन माध्यम से बच्चों से जुड़ने की शुरुआत की और कुछ-कुछ गतिविधियों, जैसे– अपना परिचय, कविता, आर्ट, संगीत और व्यायाम, आदि के वीडियो व्हाट्सएप पर भेजना शुरू किया। इसके बाद बच्चों के द्वारा भी वीडियो आने लगे और उम्मीद की एक किरण नज़र आने लगी।

ऑनलाइन माध्यम में कुछ समस्याएँ भी थीं। एक सबसे बड़ी समस्या थी कि जहाँ एक ओर घर की आधारभूत ज़रूरतें पूरी करने में दिक़्क़तें थीं, वहीं फ़ोन में महँगा नेट रिचार्ज करना एक बड़ी समस्या थी, सभी के पास स्मार्टफ़ोन की उपलब्धता भी नहीं थी। लॉकडाउन खुलने के बाद जिन बच्चों के माता-पिता दोनों ही काम पर जाते थे, उनके पास वीडियो बनाकर भेजने का समय नहीं था।

जैसे-जैसे कोरोना का असर दिख रहा था, वैसे-वैसे यह भी स्पष्ट हो रहा था कि ऑनलाइन से आगे बढ़कर और भी कुछ चीज़ें सोचनी होंगी ताकि हम सभी तक अपनी पहुँच सुनिश्चित कर पाएँ। अनलॉक 1 के बाद कुछ रियायतें दी गईं जिनके आधार पर हमने साप्ताहिक वर्कशीट के बारे में सोचना शुरू किया।

वर्कशीट

वर्कशीट प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में कोई नया शब्द नहीं है। पहले भी हम कक्षा में ज़रूरत के अनुसार समय-समय पर वर्कशीट का प्रयोग करते रहे हैं, लेकिन पहले और अभी की स्थिति में एक बड़ा अन्तर था। अमूमन वर्कशीट का प्रयोग बच्चों के साथ एक प्रारम्भिक टूल के रूप में नहीं करते हैं। जब बच्चा कक्षा प्रक्रियाओं को समझने लगता है और सुनने, बोलने जैसी क्षमताओं से आगे बढ़कर पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में प्रवेश करता है तब वर्कशीट का प्रयोग करते हैं। माने, बच्चे कुछ ऐसी क्षमताएँ हासिल कर लें कि वे वर्कशीट को देखकर समझ पाएँ। लेकिन कोरोना की इस स्थिति में, हमने सभी बच्चों तक अपनी पहुँच बनाने के माध्यम के रूप में वर्कशीट को ही लिया। वर्कशीट बनाने की यह प्रक्रिया चुनौती के साथ-साथ सीखने के अवसर लेकर आई, जहाँ शुरुआत में हमारे लिए यह समझना बहुत मुश्किल था कि ऐसे छोटे बच्चों के लिए वर्कशीट किस प्रकार बनाई जाए, जैसे–

- वर्कशीट में क्या कार्य दिया जाए?
- कितने पेज की बनाई जाए?
- गतिविधियाँ कैसी हों?
- क्या सिर्फ़ रंग भरने वाली गतिविधि दी जाए?
- अन्य और किस प्रकार की गतिविधि दी जा सकती हैं?
- इसकी भाषा को कैसे इतना सरल किया जाए कि अभिभावक इसे समझ पाएँ?
- इसमें बड़े चित्र का उपयोग किया जाए या मध्यम आकार के चित्रों से उन्हें समझ आ जाएगा?

चित्र : प्रशांत सोनी

- चित्रों के अनुपात पर ध्यान दिया जाए। मसलन, यदि किसी चित्र में मुर्ग़ी बड़ी और गाय छोटी दिख रही है तो कहीं बच्चा मुर्ग़ी को बड़ा मानकर उसपर गोला न कर दे, क्योंकि चित्र में वह बड़ी दिख रही है, जबकि वास्तविकता में गाय बड़ी और मुर्ग़ी छोटी होती है।
- एक पेज में कितने चित्र और कितने निर्देश रखे जाएँ ताकि अभिभावकों और बच्चों को समझ आ सकें?
- और सबसे मुख्य प्रश्न यह कि बनाई गई वर्कशीट बच्चे के सीखने में कैसे मदद करेगी?

वर्कशीट का उपयोग हम केवल पढ़ने-लिखने के रूप में देख पा रहे थे। बच्चों को सुनने और बोलने के अवसर इसके ज़रिए नहीं मिल पा रहे थे। इसके साथ ही हमें यह भी समझ नहीं आ रहा था कि इसे करने में बच्चे को अपने परिवार से कितनी मदद मिल पाएगी। मनोस्थिति की इस उथल-पुथल के चलते शुरुआत कुछ सरल चित्रों और कौशलों से की गई। इसके तहत मिलान करने और रंग भरने की गतिविधियाँ, शरीर के अंगों को उनके द्वारा

किए जाने वाले कामों से मिलाने, छोटे-बड़े में अन्तर बताने, बड़े चित्र में रंग भरने, जैसी गतिविधियाँ वर्कशीट में दी गईं।

वर्कशीटों पर काम का सफ़र

सबसे पहली वर्कशीट कुल 2 पेज की थी। इसमें आगे और पीछे दोनों तरफ़ चित्र बने हुए थे। यह वर्कशीट बच्चों तक पहुँचाई गई। साथ ही प्रत्येक बच्चे के अभिभावक से वर्कशीट पर किए जाने वाले कार्य को लेकर बात की गई। उन्हें बताया गया कि बच्चे को इसमें क्या करना है, वे बच्चों की मदद कैसे कर सकते हैं, आदि। अभिभावकों से इस बारे में भी बात की गई कि क्या वर्कशीट में दिया गया कार्य उनको आसान लगता है, और क्या बच्चे इसे कर पाएँगे। ज़्यादातर अभिभावकों ने कहा कि यह आसान है बस पृष्ठों की संख्या बढ़ा दी जाए। केवल 2 पेज बच्चे एक-दो दिन में ही कर लेंगे। इसी को आधार मानते हुए अगले सप्ताह के लिए दूसरी वर्कशीट 4 पेज की बनाई गई।

एक सप्ताह के बाद वर्कशीट वापस आईं। उनका अवलोकन करने पर पाया कि लगभग सभी बच्चों ने एक स्तर पर इस कार्य को करने की कोशिश की थी। इसे देखते हुए हमने वर्कशीट में बच्चे के लिए और सोचने के अवसर तलाशने शुरू किए। अपने आसपास से जुड़ी चीज़ों को लेकर उसपर आधारित काम वर्कशीट में कराना शुरू किया और निरन्तर इसमें सुधार किया। कोरोना के हालात सुधरने पर बच्चों के घर विज़िट की। बच्चों से बातचीत कर उनके द्वारा किए गए वर्कशीट के काम को समझने लगे। कुछ-कुछ चीज़ें समझ आईं। मसलन, कुछ अभिभावक बहुत अच्छे-से वर्कशीट को लेकर बच्चों से बात कर रहे हैं लेकिन कुछ स्थितियाँ बिलकुल विपरीत थीं। कुछ अन्य अभिभावक बच्चों से काम करवाते समय कोई बातचीत नहीं कर रहे थे, बल्कि यांत्रिक रूप से केवल वर्कशीट पूरी करवा रहे थे। इस स्थिति को समझने की कोशिश में सामने आया कि अभिभावकों से इस सन्दर्भ में बातचीत करने की ज़रूरत है कि वर्कशीट करवाने के दौरान बच्चों से बातचीत कैसे की जाए और क्या-क्या बात की जा सकती है? इसके भी कुछ बिन्दु गतिविधि के साथ लिखकर भेजने की कोशिश की, साथ ही वर्कशीट देते समय अभिभावकों और बच्चों से स्पष्टता के साथ बात भी की।

यह लगने लगा था कि वर्कशीट बच्चों से जुड़ने में मज़बूत भूमिका अदा कर रही है। एक बड़ी चुनौती और थी कि वर्कशीट को और बेहतर कैसे बनाया जाए ताकि बच्चों को पढ़ने-लिखने के साथ-साथ अन्य प्रारम्भिक कौशलों, जैसे– सुनने और बोलने, अवलोकन, खोज और विश्लेषण, आदि के अवसर भी मिलें।

अगली कोशिश वर्कशीट को थीम से जोड़कर और बेहतर बनाने की थी। शुरुआत में दी गई वर्कशीट की अधिकतर गतिविधियाँ 'मैं और मेरा परिवार' थीम को लेकर थीं। इनमें परिवार में कौन-कौन है, शरीर के अंगों की पहचान और उनके कार्य को लेकर विवरण दिया गया था। दूसरी वर्कशीट में आसपास के

चित्र : प्रशांत सोनी

बच्चो से नीचे दिये गये जानवरो को लेकर बात करे कि कौन क्या खाता है जिस चीज़ को वह जानवर नही खाता उस पर गोला बनाने को कहे ।इसके अलावा शाकाहारी और मांसाहारी जानवरो के बारे में भी बात करे।

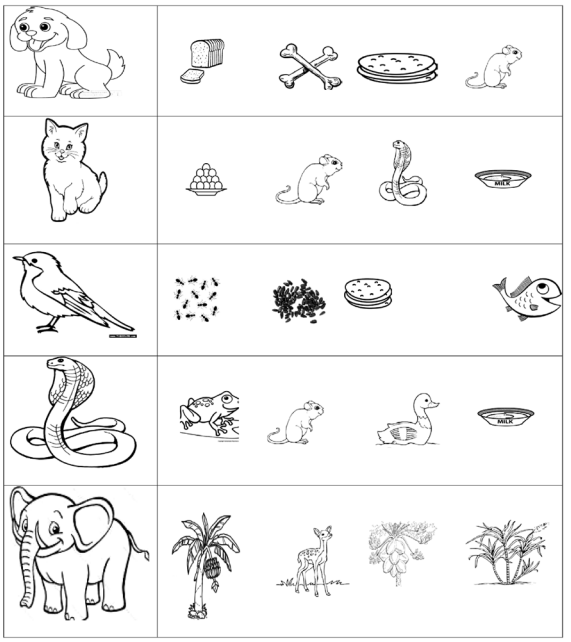

चित्र : वर्कशीट नमूना 1

वातावरण अर्थात, जानवर, भोजन और पेड़-पौधे, जल आदि थीम-आधारित गतिविधियाँ थीं। गणित के अन्तर्गत भी विभिन्न आकृतियों की पहचान, बड़े और छोटे की पहचान, कम और ज़्यादा का अनुमान लगाना, अलग आकृति को पहचानना आदि गतिविधियाँ वर्कशीट के माध्यम से कराई गईं।

यही नहीं, बच्चों के घर पर उनकी मदद करवाने के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर इन्हें तीन स्तरों पर बनाया गया :

- स्तर 1 : उन बच्चों के लिए, जहाँ घर में उनकी सहायता के लिए कोई नहीं था, सरल रंग भरने, चित्रों को देखकर बिना निर्देशों को पढ़े केवल चित्र-आधारित गतिविधियाँ दी गईं। जिनमें बच्चे दिए गए उदाहरण या कभी-कभार पड़ोसियों द्वारा मदद करने पर बच्चे यह समझ पाते थे कि वर्कशीट में क्या करना है।

- स्तर 2 : वे बच्चे जिनके अभिभावक हिन्दी पढ़ पाते थे और बच्चे को कार्य में मदद कर पाते थे। यहाँ भी अभिभावक बच्चों को केवल मौखिक सहयोग के लिए होते थे, बाक़ी गतिविधियाँ बच्चों के करने हेतु ही बनाई जाती थीं।

- स्तर 3 : ऐसे बच्चों के लिए जिनके अभिभावक अँग्रेज़ी भी पढ़-लिख लेते थे और सक्रियता से बच्चों के पठन-पाठन में मदद कर पाते थे। इस समूह में गतिविधियाँ एक स्तर कठिन होती थीं क्योंकि प्रारम्भिक कौशलों में बच्चे काफ़ी निपुण थे।

बच्चों के नज़रिए से वर्कशीट की समझ

घर की विज़िट के दौरान बच्चों से की गई बातचीत, वर्कशीट की समझ, इसके सुधार और बेहतरी में काफ़ी अहम रही। एक विज़िट के दौरान जब एक बच्ची से वर्कशीट के एक चित्र के बारे में पूछा तो उसने उसका नाम नहीं बताया। एक शिक्षक के नाते उसकी मदद करने के लिए मैंने अपनी समझ के अनुसार उसे बतख़ और डक बोला, पर वह सहमत नहीं हुई। मुझे एहसास हुआ कि शायद ये कुछ और बोलना चाह रही है। मैं उससे पूछने लगी, और उस बच्ची ने मुझे काफ़ी समझाने की कोशिश की, पर मैं समझ न सकी। उसने अपने परिवेश के अनुसार मुझे बताया कि यह, यहाँ रहता है, खेत में भी होता है। मैंने उसके घरवालों की मदद ली कि यह क्या बता रही है? उन्होंने बताया कि ये हंस के बारे में बात कर रही है। तब मुझे लगा कि वह भी ग़लत नहीं थी। उसने हंस के बारे में काफ़ी कुछ सही बताया और सरलता से कहा, "मुझे नहीं पता यह क्या खाता है क्योंकि मैंने इसे कभी खाते नहीं देखा है।" यही नहीं, ऐसे और भी चित्र थे जिन्हें शायद हम अपने नज़रिए से देखते हैं और

वही बताते हैं, लेकिन बच्चों की नज़र में वो कुछ और होते हैं। जैसे– रोटी को एक बच्चे ने बर्ग़र कहा था, और चींटी को मधुमक्खी।

ऐसे उदाहरण भी हैं जिनसे यह समझने में मदद मिली कि हमें वर्कशीट को लेकर अभिभावकों के साथ क्या और कितना संवाद करना है। एक गतिविधि में बच्चों को घर में गोल वस्तुएँ ढूँढ़ने और साथ ही उनका चित्र बनाने का काम दिया गया था। इस गतिविधि में अभिभावकों ने अपनी समझ के अनुसार पृथ्वी, चाँद, आदि चीज़ें बना दीं। जब बच्चों से पूछा गया तो वह इन चित्रों को लेकर स्पष्ट नहीं थे। अभिभावकों से भी बात की गई कि हमें बच्चे को ऐसी चीज़ें नहीं रटानी हैं जिनका बच्चे अपनी समझ से कोई सम्बन्ध न जोड़ पाएँ या जो उनके अनुभव से मेल न खाती हों। जब बच्चों को उसके आसपास चीज़ें देखने को कहा तो उन्होंने स्वयं से ही काफ़ी चीज़ें ढूँढ़ीं, जैसे– कटोरी, गेंद, ढक्कन, घड़ी, चूड़ी, बिन्दी, रोटी आदि। अभिभावकों के साथ हुए ऐसे अनुभवों के मद्देनज़र अभिभावकों से सीखने की प्रक्रिया को लेकर लगातार बात की गई कि वे बच्चों को आसपास की चीज़ों का अवलोकन करने, उन्हें सोचने और समझने के भरपूर मौक़े प्रदान करें।

एक और उदाहरण है जहाँ रसोई में खाना बनाते हुए एक आदमी के चित्र को बड़ा करके केन्द्रित किया गया था, और महिला के चित्र को एक किनारे छोटा-सा कुछ और कार्य करते हुए दिखाया गया था। इसपर एक बच्चे का स्पष्ट व्यंग्य था, "पापा कोई खाना बनाते हैं क्या?" उसके अनुसार यह ग़लत था क्योंकि खाना मम्मी बनाती हैं और इसलिए उसका मानना था कि यहाँ ग़लत फ़ोटो लगाई गई है।

बच्चों और अभिभावकों के साथ हुए ऐसे अनुभवों और बातचीत ने उनके नज़रियों को समझने के अवसर दिए और इनमें बनी समझ को भी हम वर्कशीट में जोड़ते गए। क्योंकि यह अभिभावकों और बच्चों दोनों के नज़रियों को

चित्र : वर्कशीट नमूना 1

एक साथ समझने के अवसर देता था। ऐसा ही प्रयास हमने एक कविता को वर्कशीट में देते वक़्त किया जहाँ 'मम्मी की रोटी गोल गोल, पापा का पैसा गोल गोल' को बदलकर 'खाने की रोटी गोल गोल और रुपए का पैसा गोल गोल' कर दिया।

हमने जो सीखा

स्कूल बच्चे के सम्पूर्ण विकास पर काम करने का मौक़ा देता है। वर्कशीट एवं ऑनलाइन

माध्यम स्कूल और कक्षा का विकल्प नहीं हो सकते। इनकी एक सीमा है। लेकिन कोरोना की विपरीत परिस्थितियों में ऑनलाइन माध्यम और वर्कशीट बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जारी रखने का ज़रिया बने। ये शिक्षा की निरन्तरता को बनाए रखने में कुछ हद तक मददगार भी हुए। वर्तमान स्थिति में शिक्षा को एक नए नज़रिए से देखने का मौक़ा मिला कि कैसे अलग-अलग स्थितियों में शिक्षा के मायने और तरीक़े बदलते हैं। यह भी समझ आया कि बच्चों को दिए जाने वाले काम के माध्यम से भी अभिभावकों से जुड़ा जा सकता है और बच्चों की शिक्षा के बारे में उनसे बात की सकती है।

इस पूरे काम में कुछ और बातें भी अवलोकित हुईं और समझ आईं। वो थीं :

- शिक्षा को बच्चों के परिवेश में रहकर उनके जीवन से जोड़कर समझने और देखने का मौक़ा मिला।
- यह समझ आया कि स्कूल में एक जैसे दिखने वाले बच्चे किस तरह के अलग परिवेश से आते हैं।
- बच्चों के साथ उनके परिवार, रहन-सहन और परिवार में उनकी शिक्षा को लेकर सोच को समझने का मौक़ा मिला।
- माता-पिता हमेशा इस भ्रम में जीते हैं कि स्कूल और शिक्षक ही शिक्षा के कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं। वर्तमान स्थिति में उनकी सोच में बदलाव आया है कि वह स्वयं भी शिक्षा के क्षेत्र में अहम भूमिका निभा सकते हैं।
- बहुत जगह देखने को मिलता है कि पढ़ने-पढ़ाने के कार्यों में बच्चे का विश्वास सबसे ज़्यादा शिक्षक पर होता है। वे सोचते हैं कि शिक्षक ही ये काम कर सकते हैं उनके माता-पिता नहीं। आज जब अभिभावक पढ़ने-पढ़ाने के कार्य में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं, तो बच्चे को भी इस बात का एहसास हो रहा है कि माता-पिता भी इस कार्य में उसकी मदद कर सकते हैं।

चित्र : प्रशांत सोनी

- एक महत्त्वपूर्ण सीख यह रही कि हर बच्चे का अपना अलग दृष्टिकोण होता है और स्कूल आकर बच्चे एक ही साँचे में ढलने लगते हैं, जबकि प्रत्येक बच्चे का अपनी शैली, प्रतिभा और चीज़ों को लेकर अपना नज़रिया होता है। इस दौरान हम यह भी समझ पाए कि भविष्य में सीखने के लिए कैसे हम अपनी कक्षा में ऐसा माहौल बनाएँ जहाँ बच्चे किसी शिक्षक या अन्य बच्चे के नहीं, अपितु स्वयं के नज़रिए को रख पाएँ।
- शिक्षा की जब हम बात करते हैं तब हम यह जानते और समझते हैं कि

शिक्षा कक्षा-कक्ष के अन्दर सीमित नहीं होती। बच्चे अपने परिवेश और अन्य बच्चों के साथ में सीखते हैं, लेकिन कहीं-न-कहीं हम अभी शिक्षा को शिक्षक और स्कूल तक सीमित कर देते हैं। वर्तमान समय में हमें शिक्षा को एक अलग नज़रिए से देखने और शिक्षा व्यवस्था में अनौपचारिक शिक्षा को और मज़बूत करने की ज़रूरत है। साथ ही कुछ ऐसे माध्यमों को मज़बूत करने की भी ज़रूरत है जिनसे भविष्य में सीखने की प्रक्रिया बाधित न हो।

- हमें अपनी कक्षाओं को और लचीला बनाने की आवश्यकता है ताकि बच्चों के परिवेश को जगह मिले और शिक्षा उनके जीवन व अनुभवों से जुड़ी हो।

कविता कपिल को शिक्षा में कार्य करने 6 वर्ष का अनुभव है। इन्होंने 4 साल तक चिराग संस्था में कार्य किया है और पिछले 2 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रही हैं। फ़िलहाल अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उधम सिंह नगर, दिनेशपुर, उत्तराखंड में अध्यापन कार्य कर रही हैं।
सम्पर्क : kavita.kapil@azimpremjifoundation.org

कल्पना पंवार को शिक्षा में कार्य करने का 4 वर्ष का अनुभव है। वह 4 साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़ी हैं। फ़िलहाल अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उधम सिंह नगर, दिनेशपुर, उत्तराखंड में अध्यापन का कार्य कर रही हैं।
सम्पर्क : kalpana.panwar@azimpremjifoundation.org